तरीक़ा

-ए-

तहारत व सलात

NOT FOR SALE

नाम किताब : तरीक़ा-ए-तहारत व सलात

तालीफ़ : शैख़ इब्न-ए-बाज़

शैख़ इब्न-ए-उसैमीन
मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

सफ़्हात : ८९

तादाद-ए-ईशाअत : १,०००

तारीख़-ए-इशाअत : मार्च २०१५

प्रकाशक : **दारुलख़ैर फाउन्देशन**
५, लेक पलाज़ा, तलाव पाली,
कौसा, मुंब्रा, ज़िला थाने-४००६१२
9594690742
Darulkhair.network@gmail.com
www.darulkhair.net

विषय सूची

अर्ज़-ए-नाशिर ४

शैख़ इब्न-ए-बाज़
नमाज़-ए-नबवी का तरीक़ा ८
नमाज़ बाजमाअत की अहमियत २८

शैख़ इब्न-ए-उसैमीन
वज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ ४०
नमाज़ में मकरूह चीजें ५३
नमाज़ को बातिल करने वाली चीजें ५३
सजदा-ए-सहु के अहकाम ५४
मरीज़ की तहारत का तरीक़ा ५८
मरीज़ की नमाज़ का तरीक़ा ६१

इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब
नमाज़ की शर्तें ६४

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من
لا نبي بعده۔ اما بعد

नमाज़ दीन का सुतून और शहादतैन के इक़्रार के बाद इस का एक अहम रुकन है। और इस नमाज़ की अहमियत की सबसे बड़ी दलील यह है कि शब-ए-मेंराज में सातवें आसमान पर बिना किसी वास्ता के फर्ज़ हुई जब कि दिगर अर्कान की फर्ज़ियत रू-ए-ज़मेंन पर हुई।

बंदे से क़यामत के दिन सब से पहले नमाज़ ही के बारे में पूछताछ होगी। आप ﷺ फ़रमाते हैं:

إِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ العَبدُ بِصَلاتِهِ فَإِن
صَلَحَتْ فَقَد أفلَحَ وَأَنجَحَ وَإِن فَسَدَتْ فَقَد خَابَ
وَخَسَر

[सुनन निसाई:465]

बंदो से हुक़ूक़ अल्लाह में सब से पहले नमाज़ के बारे में पूछताछ होगी, अगर दुरुस्त रही तो कामियाब व कामरान होगा और

अगर नमाज़ ही बेकार रही तो वह ख़ायब व ख़ासिर होगा।
नमाज़ ही बंदे और कुफ़्र व शिर्क के बीच हद-ए-फ़ासिल है।
आप ﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكَ الصَّلَاةِ

सहाबा कराम رضی اللہ عنہم اجمعین उस शख़्स को मुनाफ़िक़ीन की सफ़ में शुमार करते थे जो नमाज़ में बा-जमाअत हाज़िर नहीं होता था।

हज़रत उमर رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं:

لاحظ فی الاسلام لمن لاصلاۃ له

(उस आदमें का इस्लाम से कुछ भी हिस्सा नहीं जिस के पास नमाज़ नहीं)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं:

من لم یصل فلا دین له

(जो नमाज़ नहीं पढ़ता उसके पास दीन भी नहीं)

आप ﷺ फ़रमाते हैं:

اَلْعَهْدُ الَّذِيْ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلَاةُ فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ

(सुनन निसाई:2621)

[हमारे (मुसलमानों) और उन (मुशरिकीन) के दर्मियान नमाज़ ही हद्-ए-फ़ासिल है, तो जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने कुफ़्र किया]
नमाज़ अगर हक़ीक़ी मायने में नमाज़ हो और उस के अर्कान व वाजिबात की अदायगी सुन्नत-ए-रसूल ﷺ के मुताबिक़ हो तो यह इन्सान को बुराईयों और फ़हाशियों से रोकती है।
इरशाद-ए-बारी तआला:

إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ

[बिला शुबहा नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है]
चूँकि हमारे कितने ऐसे भाई हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन उनकी नमाज़ नमाज़-ए-नब्वी नहीं होती है जिसकी वजह से उसका असर उन पर ज़ाहिर नहीं होता और कुछ तो इतने गए गुज़रे होते हैं जो सिर्फ़ नाम के मुसलमान होते हैं उन्हें नमाज़ पढ़ने की सिरे से तौफ़ीक़ ही नहीं होती। अल्लाह तआला उन तमाम लोगों को हिदायत दे।
यह पुस्तक जिस में सऊदिया अरबिया नाम्वर व चुनिंदा उलमा-ए- कराम व मशायख़ (शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब, शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़, शैख़ मुहम्मद बिन सालेह अलुसैमेंन/ रहेमहुमुल्ला) के उन मक़ालात को एकजा किया गया है जो तरीक़ा-ए-तहारत व सलात, अर्कान, वाजिबात व शराइत पर

मुश्तमिल हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तौफ़ीक़ व मदद से इस किताब की छपाई दारूल ख़ैर फ़ाउंदेशन की जानिब से हो रही है।

बारगाह-ए-इलाही में दुआगो हूँ कि वह रब्ब-ए-कायनात इस किताब को मुफ़ीद बनाए, जिसे पढ़ कर हमारे बहुत से उन भाईयों की ग़लतियों की इस्लाह हो सके जो नमाज़ में उन से सरजद होती हैं और जिसके नतीजे में सुन्न्त-ए-रसूल की इत्तेबा करते हुए अपनी जिंदगी के हर लम्हे को गुज़ारना चाहिये इसी में दुनिया व आख़िरत की हर क़िस्म की भलाई का राज़ मुज़्मर व पोशीदा है।

किताब की छपाई में और इसे मन्ज़र-ए-आम पर लाने में भी जिन भी भाइयों का जिस क़िस्म का भी माद्दी व मानवी सहायता रही हो उन्हें अल्लाह तआला अज्र-ए-जज़ील से नवाज़े, आमेंन तक़ब्बल या रब्बल आलमेंन

अबू अब्दुल्लाह शमेंम अहमद अब्दुल हलीम मदनी

दारूलख़ैर फ़ाउंदेशन, मुंबई

मार्च 2015

नमाज़-ए-नब्वी
का
तरीक़ा

शैख़ इब्न-ए-बाज़

नमाज़-ए-नब्वी का तरीक़ा

अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ की जानिब से हर उस शख़्स के नाम पर यह पैग़ाम है:

जो रसूल-ए-अकरम ﷺ के तरीक़ा-ए-कार के मुताबिक़ नमाज़ अदा करने का ख़्वाहिशमंद हो, नबी ﷺ के फ़र्मान

صَلّوا كَمَا رَاَيتُمُونِي اُصَلّى

पर अमल पैरा होते हुए उसकी नमाज़ अदा हो।

कामिल वज़ू करे: अल्लाह तआला के हुकुम, उसके बताए हुए तारीक़े के मुताबिक़ वज़ू करें, जैसा कि इरशाद-ए-इलाही है:

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُواْ إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلاةِ فاغْسِلُواْ وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُواْ بِرُؤُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ

(ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुंह और हाथों को कोहनियों समेंत धो लो, अपने सिर का मसह करो और पाँव को टख़्नों समेंत धो लो)

और नबी ﷺ का फ़रमान है:

لاتُقبَلُ صَلاة بِغَير طَهُور

(बग़ैर वज़ू के कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती)

२) नमाज़ी क़िब्ला रुख़ हो:

नमाज़ी कहीं भी हो क़िब्ला काबा ही होगा, अपने मुकम्मल जिस्म और दिल से क़िब्ला रुख़ हो कर नमाज़ की निय्यत करे जिसे वह अदा करना चाहता है ख़्वाह वह फर्ज़ नमाज़ हो या नफ़िल, ज़बान से निय्यत की अदायगी ना करे क्युंकि यह अमर ग़ैर मशरू है, न तो नबी करीम ﷺ ने और न ही सहाबा कराम رضی اللہ عنہم اجمعین ने ज़बान से निय्यत की है।

अगर नमाज़ी इमाम या मुनफ़रिद हो तो नबी ﷺ के हुक्म के बमूजिब उसके लिए क़िब्ला की जानिब सूत्रह रख लेना मस्नून है।

३) तकबीर-ए-तहरीमा (अल्लाहु अकबर) कहे, और उसकी निगाह सज्दहगाह की तरफ़ हो।

४) तकबीरे के वक्त दोनों हाथ कंधों या कानों तक उठाए।

५) दोनों हाथ सीने पर रखे, दाईं हथेली बाईं हथेली पर हो, जैसा कि वाइल बिन हुज्र और कबीसा बिन हलब अत्ताई رضی اللہ عنہما की रिवायत में वारिद है।

६) नमाज़ के लिए दुआ-ए-सना पढ़ना मस्नून है, और यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِى وَبَيْنَ خَطَايَاىَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اَللّٰهُمَّ نَقِّنِى مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَاىَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ

(ऐ अल्लाह! दुरी डाल दे मेरे और मेरे गुनाहों के दरमियान, जिस क़दर कि दूर रखा है तु ने पूरब को पश्चिम से, ऐ अल्लाह साफ़ कर दे मुझे गुनाहों से जिस तरह पाक साफ़ किया जाता है कपड़ा मैल कुचैल से, ऐ अल्लाह! धो दे मेरे गुनाह पानी, बर्फ़ और ओले से)

अगर चाहे तो उसके बदले यह दुआ पढ़े:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالىٰ جَدُّكَ وَلَااِلٰهَ غَيْرُكَ

(ऐ अल्लाह! तू पाक है, तेरी ही हम्द है, तेरा नाम बाबरकत है, तेरी शान बुलंद है, तेरे सिवा कोई लायक़-ए-इबादत नहीं)

फिर

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पढ़े और सुरह फातिहा पढ़े, क्यूंकि नबी-ए-अकरम ﷺ का फ़रमान है:

لاصَلَاۃَ لِمَن لَم یَقرَا بِفَاتِحَۃِ الکِتَابِ

(जिस शख़्स ने सुरह फ़ातिहा न पढ़ी उसकी कोई नमाज़ ही नहीं हुई)

और उसके बाद (आमेंन) ब-आवाज़-ए-बुलंद कहे अगर जहरी नमाज़ पढ़ रहा हो, फिर क़ुरान-ए-करीम से जो कूछ याद हो पढ़े।

७) तकबीर कह कर अपने दोनों हाथ कंधो या कानों तक उठाते हुए रुकू करे, सर पीठ के बराबर करे, दोनों हाथ घुटनों पर रखे, उंगलियाँ फैली हुई हों, रुकू में इत्मिनान हो और यह दुआ पढ़े:

سُبۡحَانَ رَبِّیَ الۡعَظِیۡمُ

(पाक है मेंरा अज़मत वाला रब)

दुआ का तीन बार या उससे ज़्यादा दुहराना अफज़ल है, और उसके साथ

سُبۡحَانَکَ اللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمۡدِکَ اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡلِی

का भी पढ़ना अफज़ल है।

(पाक है तू ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब तू ही तमाम तारीफों के लायक़ है, इलाही मुझे बख़्श दे)

८) रुकू से सिर उठाये; अगर नमाज़ी इमाम या मुनफ़रिद हो तो अपने दोनों हाथ कंधों या कानों तक उठाते हुए कहे:

سمع الله لمن حمده

(अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की) और क़याम की हालत में कहे:

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءُ السَّمٰوَاتِ وَ الاَرْضِ وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْئٍ بَعْدُ

(ऐ हमारे रब! तारीफ़ तेरे ही लिए है, बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा और बाबरकत तारीफ़, आसमान और ज़मेंन और इनके इलावा जो तू चाहे इन सबके बराबर)

उसके बाद अगर इस दुआ का भी इज़ाफ़ा कर ले तो अफज़ल है:

اَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ اَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ اَللّٰهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ

وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

(ऐ तारीफ़ व बुज़ुरगी वाले! बंदे की तमाम तारीफों का सबसे ज़्यादा हक़दार तू ही है, और हम सब तेरे ही बंदे हैं, इलाही! जो तू अता करे कोई रोकने वाला नहीं हो सकता, और जो तू रोक दे उसे कोई दे नहीं सकता, और किसी दौलतमंद को उसकी दौलत तेरे अज़ाब से फ़ायदा नहीं दे सकती)

क्यूंकि कुछ सही रवायतों में नबी-ए-अकरम ﷺ से यह साबित है।

और अगर नमाज़ी मुक़्तदी हो तो रुकू से सिर उठाते वक़्त [ربنا ولك الحمد...الخ] कहे, उस वक़्त हर शख़्स के लिए सीने पर हाथ रख लेना मुस्तहब है, जिस तरह रुकू से पहले हालत-ए-क़याम में किया था, जैसा कि वाइल बिन हुज्र और सहल बिन साद رضي الله عنهما की हदीस से साबित है।

९) तकबीर कहते हुए सजदा करे, हो सके तो घुटनों को हाथों से पहले रखे: अगर उस में कोई दुश्वारी हो तो दोनों हाथ घुटनों से पहले रख ले, दोनों पैरों और हाथों की उंगलियाँ क़िब्ला रुख़ हों

और हाथों की उंगलियाँ मिली हुई हों, और सजदा इन सातों आज़ा पर करे:

पेशानी नाक के साथ, दोनों हाथ, दोनों घुटने, दोनों पैर की उंगलियों का भीतरी हिस्सा, और [سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى] (पाक है मेंरा रब बरतर) कहे, और उसे तीन बार या ज़्यादा दुहराए। उसके साथ

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللَّهُمَّ اغْفِرْلِي

(ऐ अल्लाह! तू पाक है, ऐ रब तू ही तरीफ़ों के लायक़ है, इलाही! मुझे बख़्श दे) कहना मुस्तहब है, और ज़्यादा दुआ करे, क्यूंकि नबी ﷺ का फ़रमान है:

أَمَّا الرُّكُوعُ ، فَعَظِّمُوا فِيهِ الرَّبَّ ، وَأَمَّا السُّجُودُ ، فَاجْتَهِدُوا فِي الدُّعَاءِ ، فَقَمِنٌ أَنْ يُسْتَجَابَ لَكُمْ

(रुकू में रब की बड़ाई बयान करो, और सजदा में कसरत से दुआ करो, क्यूंकि यह दुआओं की क़बूलियत के लिए बेहतर वक़्त होता है)

नीज़ आप ﷺ का इरशाद है:

أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ

[मुस्लिम]

(बंदा सजदा की हालत में अपने रब से क़रीब होता है, लेहाज़ा कसरत से दुआएं करो)

अल्लाह तआला से अपने लिए और तमाम मुसलमानों के लिए दुनिया व आख़िरत की भलाई का सवाल करे, ख़्वाह नमाज़ फर्ज़ हो या नफ़िल, दोनों बाज़ू पहलू से, पेट रानों से, और रान पिंडलियों से अलाहदा रखे, और दोनों बाज़ू ज़मेंन से उठाए रखे, जैसा कि नबी ﷺ का फ़रमान है:

اعتدلوا فى السُّجودِ , ولا يَبْسُط أحدكم ذِرَاعيْهِ انْبسَاطَ الكَلْبِ

(सजदा में एतेदाल रखो, और कोई शख़्स कुत्ते के बैठ्ने की तरह बाज़ू को न बिठाए)

१०) तकबीर कहते हुए अपना सिर उठाए, बायाँ पैर बिछा कर उस पर बैठे और दायाँ पैर खड़ा रखे, दोनों हाथ दोनों रानों और घुटनों पर रखे और यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبِّ اغْفِرْلِى رَبِّ اغْفِرْلِى رَبِّ اغْفِرْلِى اغْفِرْلِىْ وَارْحَمْنِىْ وَارْزُقْنِىْ وَعَافِنِىْ وَاهْدِنِىْ وَاجْبُرْنِىْ

(ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे, ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे, ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे, ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे, और मुझ पर रहम फरमा, मुझे रोज़ी और सहत दे, मुझे हिदायत दे और मेंरी कमियों की तलाफ़ी कर दे)

रुकू से खड़े होने की तरह जलसह में भी इत्मिनान का इल्तिज़ाम करे यहाँ तक कि हर हड्डी अपनी जगह आजाए, क्यूंकि नबी ﷺ रुकू के बाद और दोनों सजदों के दरमियान लम्बा एतिदाल करते थे।

११) "अल्लाहु अकबर" कहते हुए दूसरा सजदा बिलकुल पहले सजदा की तरह करे।

१२) "अल्लाहू अकबर" कहते हुए सिर उठाए, और दोनों सजदों के दरमियान बैठने की तरह थोड़ा सा बैठे, उसे जलसा-ए-इस्तराहत कहते हैं, सही तरीन क़ौल के मुताबिक़ यह मुस्तहब है, इसे तर्क करने में भी कोई हर्ज नहीं, ना ही इस में कोई ज़िक्र या दुआ है। फिर हो सके तो दोनों घुटनों पर हाथ का टेक लगाते हुए

दूसरी रकात के लिए खड़ा हो, और अगर ऐसा करना दुश्वार हो तो ज़मेंन पर हाथ टेक कर उठे, फिर सुरह फ़ातिहा और उसके बाद क़ुरान से जो सूरत या आयतें याद हों पढ़े, फिर इसी तरह करे जिस तरह पहली रकात में किया था।

मुक़्तदी का इमाम से पहले अर्कान की अदायगी के लिए सब्क़त करना जायज़ नहीं, क्यूंकि नबी ﷺ ने अपनी उम्मत को इससे डराया है, इमाम के साथ साथ अर्कान की अदायगी भी इसी तरह मक्रूह है, मस्नून यह है कि मुक़्तदी के तमाम अफ़आल इमाम की आवाज़ टूटने के बाद बिना ताख़ीर हों, जैसा कि नबी ﷺ का फ़रमान है:

إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا،
وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا

(इमाम इस लिए बनाया गया है ताकि उसकी इक़्तिदा की जाए, लेहाज़ा उसकी मुख़ालिफ़त ना करो, तो जब वह तकबीर कहे तो तकबीर कहो, और (سمع الله لمن حمده) कहे तो (ربنا ولك الحمد) कहो, और जब सजदा करे तो सजदा करो)

१३) अगर नमाज़ सनई यानी दो रकात वाली हो मस्लन नमाज़-ए- फजर, जुमा और ईद की नमाज़, तो दूसरे सजदे से सिर उठाने के बाद दायाँ पैर खड़ा कर के बायाँ पैर बिछा कर बैठे, दायाँ हाथ दाईं रान पर रखे इस हाल में कि शहादत की उंगली के एलावा बाक़ी तमाम उंग्लीयाँ सिमटी हुई हों, शहादत की उंगली से वहदानियत का इशारा करे, अगर ख़िन्सिर और बिन्सिर को समेंट ले और अंगूठा और दर्मियानी उंगली का हलक़ा बना कर शहादत की उंगली से इशारा करे तो बेहतर है, क्यूंकि दोनों तरीक़े नबी ﷺ से साबित हैं, अफज़ल यह है की कभी इस पर अमल करे कभी उस पर, बायाँ हाथ बाईं रान और घुटने पर रखे, फिर इस जलसा में तशह्हुद पढ़े, तशह्हुद यह है:

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ
عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

(तमाम तारीफ़ें और दुआएं और पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह ही के लिए हैं, सलाम हो आप पर ऐ नबी, और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक

बंदो पर, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं)

फिर यूँ कहे;

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

(ऐ अल्लाह! मुहम्मद और आल-ए-मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जैसा कि तू ने रहमत नाज़िल फरमाई इब्राहीम और आल-ए-इब्राहीम पर, बेशक तू तारीफ़ के लायक़ और बुज़रुग है, और बरकत नाज़िल फरमा मुहम्मद और आल-ए-मुहम्मद पर जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल फरमाई इब्राहीम और आल-ए-इब्राहीम पर, बेशक तू लायक़-ए-हम्द और बुज़रुग है)

और चार चीजों से अल्लाह की पनाह तलब करे और कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ
عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ
شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ

(ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह चाहता हूँ जहन्नम के अज़ाब से, और अज़ाब-ए-क़ब्र से, और ज़िंदगी व मौत के फ़ित्ना से, और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से)

फिर दुनिया व आख़िरत की भलाई के लिए जो भी दुआ करना चाहे करे, अपने माता-पिता या दूसरे मुसलमानों के लिए दुआ करने में कोई हर्ज नहीं, ख़्वाह फ़र्ज़ नमाज़ हो या नफ़िल

السلام عليكم ورحمة الله

कहते हुए दाएं और बाएं सलाम फेरे।

१४) अगर नमाज़-ए-सलासी (तीन रकात वाली) मस्लन नमाज़-ए-मगरिब या रुबाई (चार रकात वाली) मस्लन ज़ुहर, असर या इशा की नमाज़ हो तो मज़कूरह तशह्हुद पढ़े और नबी ﷺ पर दरूद भेजे, फिर अपने दोनों घुटनों पर टेक लगा कर, दोनों हाथ मोढों तक उठाते हुए (अल्लाहू अकबर) कह कर खड़ा हो जाए, और दोनों हाथ पहले की तरह सीने पर रखे और सिर्फ़ सुरह फ़ातिहा पढ़े।

अगर कभी ज़ुहर की तीसरी और चौथी रकात में फ़ातिहा के एलावा कुछ और पढ़ ले तो कोई हर्ज नहीं, क्यूंकि अबू सईद رضی اللہ عنہ की रिवायत में नबी-ए-अकरम صلی اللہ علیہ وسلم से साबित यह है, फिर मग़रिब की तीसरी और ज़ुहर, असर और इशा की चौथी रकात के बाद तशह्हुद पढ़े, नबी صلی اللہ علیہ وسلم पर दरुद व सलाम भेजे, अज़ाब-ए-जहन्नम और अज़ाब-ए-क़ब्र, जिंदगी व मौत के फ़ित्ना और मसीह-ए-दज्जाल के फ़ित्ना से अल्लाह की पनाह तलब करे, और ज़्यादा से ज़्यादा दुआ करे, जैसा कि दो रकात वाली नमाज़ में बयान हो चुका है।

अलबत्ता इस क़ादा में तो रुक करे, यानी बायाँ पैर दाएं पैर के नीचे से निकालते हुए मक़अद ज़मेंन पर रखे और दायाँ पैर खड़ा हो, जैसा कि अबू हमेंद رضی اللہ عنہ की रिवायत से साबित है।

फिर السلام عليكم ورحمة الله कहते हुए दाएं और बाएं सलाम फेरे।

फिर तीन मरतबा {اَسْتَغْفِرُ اللّٰهِ} कह कर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا
ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ

لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْئٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا
مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدّ،
لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا
اِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا
اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ

(इलाही! तू सलामती वाला है, और तुझ ही से सलामती हासिल होती है, ऐ बुज़ुरगी और इज़्ज़त वाले! तेरी ज़ात बाबरकत है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद-ए-बरहक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है, वही सज़ावार-ए-हमद व सना है, और वही हर चीज़ पर क़ादिर है, इलाही! जो तू अता करे उसे कोई रोक नहीं सकता और जो ची तू रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता, किसी दौलतमंद की दौलत उसे तेरे अज़ाब से कुछ भी फायदा नहीं दे सकती, नहीं है कोई क़ुदरत और ताक़त, नुक़्सान से बचने और फ़ायदा हासिल करने की, मगर अल्लाह के लिए, नहीं है कोई माबूद-ए-बरहक़ मगर अल्लाह, हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं, नेमतें पहुँचाना और फज़ल

करना उसी का काम है, और उसी की अच्छी तारीफ़ है, नहीं है कोई लायक़-ए-इबादत मगर अल्लाह, उसी के लिए हमारी इताअत है अगर-चे काफ़िर बुरा माने)

33 मरतबा अल्लाह की तस्बीह बयान करे (यानी سبحان الله कहे), और इसी मिक़्दार में तम्हीद الحمد لله व तकबीर الله اکبر। करे और सौ की तादाद इस दुआ से मुकम्मल करे:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(अल्लाह के सिवा माबूद नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है, और वही सज़ावार-ए-हमद व सना है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है)

हर नमाज़ के बाद आयतल-कुर्सी,

قل هو الله احد، قل اعوذ برب الفلق، اور قل اعوذ برب الناس

पढ़े, इन तीनों सुर्तों का नमाज़-ए-फ़जर और मग़रिब के बाद तीन तीन बार पढ़ना मुस्तहब है, जैसा कि इसके मुतअल्लिक़ नबी

ﷺ से सहीह हदीस वारिद है, इसी तरह मज़कूरह दुआओं के एलावा नमाज़-ए-फजर और मग़रिब के बाद यह दुआ पढ़ना भी मुस्तहब है:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

यह दुआ दस बार पढ़े, क्यूंकि ऐसा नबी ﷺ से साबित है। अगर इमाम हो तो तीन मरतबा इस्तिग़फ़ार और

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

कहने के बाद मुक़्तदियों की तरफ़ रुख़ करे, फिर मज़कूरा दुआएं पढ़े, जैसा कि नबी ﷺ से साबित-शुदा अक्सर रिवायतें इस पर दलालत करती हैं, जिन में सही मुस्लिम की हज़रत आयशा رضی اللہ عنہا की रिवायत भी है, यह तमाम दुआएं मस्नून हैं फर्ज नहीं। हर मुसलमान मर्द व औरत के लिए मुस्तहब है कि वतन में अपने घर मोक़ीम शख़्स बारह (१२) रकातों पर मोहाफिज़त करे, जो इस तरह हैं: चार रकातें ज़ुहर से पहले, दो रकातें उसके बाद, दो रकात मग़रिब के बाद, दो रकात इशा के बाद, और दो रकात

नमाज़-ए-फजर से पहले। नबी-ए-अकरम ﷺ इनकी मोहाफिज़त करते थे, इन्हें सुनन-ए-रवतिब कहते हैं।

सही मुस्लिम में उम्मे हबीबा رضی اللہ عنہا से साबित है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया:

مَن صَلّى اثنَتَى عَشرَةَ رَكعَةً فِي يَومِهِ وَلَيلَتِهِ تَطَوّعًا بَنَى اللهُ لَهُ بَيتًا فِي الجَنّةِ

(जिस ने रात व दिन में बारह रकात नफ़ली नमाजें पढ़ीं अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर बनायेगा)

इमाम तिरमिज़ी رحمہ اللہ ने इस हदीस के ज़िक्र करने के बाद यही तफ़्सीर की है जो हम ने ज़िक्र की।

अलबत्ता हालत-ए-सफ़र में नबी ﷺ ज़ुहर, मग़रिब और इशा की सुन्नतें तर्क कर देते थे मगर सुन्नत-ए-फजर और वित्र की मोहाफिज़त करते, हमारे लिए आप ﷺ की सीरत उसवा-ए-हसना है, जैसा कि इरशाद बारी है:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

(यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह ﷺ की सीरत व अमल में बेहतरीन नमूना मौजूद है)

नीज़ आप ﷺ का फ़रमान है:

صلوا کما رایتمونی اصلی

(तुम इसी तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ते हुए देखते हो)

واللہ والی التوفیق، وصلی اللہ علی نبینا محمد بن عبد اللہ

وعلی آلہ واصحابہ واتباعہ باحسان الی یوم الدین

नमाज़ बाजमात की अहमियत

अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ की जानिब से तमाम मुसलमानों के लिए:

अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को अपनी रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे, मुझे और तमाम मुसलमानों को अपने डरने वाले और मुत्तक़ी बंदों में शामिल फ़रमाए, आमेंन!

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू – अम्मा बाद!

मुझे मालूम हुआ कि बहुत सारे लोग जमाअत से नमाज़ की अदायगी में सुस्ती बरतते हैं, और दलील पेश करते हैं कि कुछ उलमा-ए-कराम ने इस सिलसिले में आसानी दी है, लेहाज़ा नमाज़ की अज़मत व अहमियत और ख़तरात को मद्दे नज़र रखते हुए यह बयान वाज़ेह करना ज़रुरी समझा।

मुसलमान को यह ज़ेब नहीं देता कि ऐसे मामला में सुस्ती करे जिस की अहमियत व अज़मत किताब व सुन्नत में बयान की गई हो, अल्लाह तआला ने अपनी किताब में कसरत से नमाज़ का ज़िक्र किया है, उसकी हिफाज़त और जमाअत से अदायगी का हुकुम दिया है, इसमें सुस्ती और बेप्रवाही को मुनाफ़िक़ीन की सिफ़त क़रार दिया है, चुनान्चेह इरशाद है:

حَافِظُواْ عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلاَةِ الْوُسْطَى
وَقُومُواْ لِلّهِ قَانِتِيْنَ

[नमाज़ की हिफाज़त करो, बिल्ख़ुसूस दर्मियान वाली नमाज़ की, और अल्लाह तआला के लिए बाअदब खड़े रहा करो]

जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के साथ इसे अदा ना करता हो उसके मुतअल्लिक़ यह कैसे समझा जायेगा कि वह उसकी ताज़ीम करता है और उसको अहमियत देता है, अल्लाह तआला का इरशाद है:

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

(और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात दो और रुकू करने वालों के साथ रुकू किया करो)

यह आयत बिलकुल सराहत के साथ नमाज़ बाजमात वाजिब होने पर दलालत करती है, सिर्फ़ इस को अदा करना मकसूद होता तो आयत के आख़िरी हिस्से { وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ} की कोई मुनासिबत मालूम नहीं होती, क्योंकि आयत के पहले हिस्से में इस को पढ़ने का हुक्म है।

अल्लाह तआला का इरशाद है :

وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ
طَائِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا

سَجَدُواْ فَلۡيَكُونُواْ مِن وَرَآئِكُمۡ وَلۡتَأۡتِ طَآئِفَةٌ
أُخۡرَىٰ لَمۡ يُصَلُّواْ فَلۡيُصَلُّواْ مَعَكَ وَلۡيَأۡخُذُواْ
حِذۡرَهُمۡ وَأَسۡلِحَتَهُمۡ

(अन-निसा:102)

(और जब तुम उन में मौजूद रहो और उन के लिए नमाज़ खड़ी करो तो चाहिए कि उन की एक जमाअत तुम्हारे साथ अपने हथियार लिए खड़ी हो, फिर जब यह सजदा कर चुकें तो यह हट कर पीछे आजाएं, और दूसरी जमात जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी वह आ जाए और तुम्हारे साथ नमाज़ अदा करें और अपना बचाओ और अपने हथियार लिए रहे)

जब अल्लाह ने जंग की हालत में नमाज़ को जमात के साथ अदा करने का हुक्म दिया तो फिर अमन की हालत में इस का क्या हुक्म होगा?

अगर किसी को जमात छोड़ने की इजाज़त होती तो जो लोग जंग में और दुश्मनों के मुक़ाबला पर मौजूद हों वह इस के ज़्यादा मुस्तहिक़ होते।

जब उन्हें इजाज़त नहीं दी गई तो यह मालूम हुआ कि जमात के साथ नमाज़ अदा करना अहम-तरीन वाजिबात में से है, और किसी का भी इस से पीछे रहना जायज़ नहीं है।

सहीहैन में अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

لَقَدْ هَمَمْتُ ان آمُرَ بِالصَّلَاةِ فَتُقَامَ، ثُمَّ آمرَ
رَجُلاً ان يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ، ثُمَّ انطَلِقَ بِرِجَالٍ
مَعَهُم حَزَمٌ مِن حَطَبٍ، إِلَى قَومٍ لا يَشهَدُونَ
الصَّلاةَ، فَاحرِقَ عَلَيهِم بُيُوتَهُم

(अल-हदीस)

(मैं ने इरादा किया की नमाज़ का हुक्म दूँ और जमात खड़ी हो, फिर एक शख़्स को इमामत के लिए खड़ा करदूं, फिर कुछ लोगों के साथ ईंधन ले कर उन लोगों के पास जाऊँ जो नमाज़ों में हाज़िर नहीं होते, उन के साथ उन के घरों को भी जला डालूँ)

सही मुसलिम में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ से रिवायत है, बयान करते हैं :

لَقَدرَاَیتنا وَمَا یَتَخَلّف عَنِ الصّلاۃِ اِلا مُنَافِق
علمَ نِفَاقه، اَو مَرِیض، وَاِن کَان المَرِیض
لَیَمشِی بَینَ الرّجلَینِ حَتّی یَاتِی الصّلاۃ

(मैं ने देखा कि नमाज़ से वही शख़्स पीछे रहता था जो मुनाफ़िक़ हो, और जिस का निफ़ाक़ सब को मालूम हो, या मरीज़, अगरचे मरीज़ भी दो आदमियों के सहारे चल कर नमाज़ को आता था)

नीज़ उन्होंने फ़रमाया:

اِنّ رَسُولَ اللہِ ﷺ عَلّمَنَا سُنَنَ الھُدَی، وَاَن مِن
سُنَنِ الھُدَی الصّلاۃ فی المَسجِدِ الّذِی یُوذن
فِیه

नबी ﷺ ने हमें हिदायत का तरीक़ा सिखाया जिस में यह बात भी है कि नमाज़ उस मस्जिद में अदा की जाए जिस में अज़ान होती है)

सही मुसलिम ही में इन्हीं से रिवायत है, फ़रमाया:

مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَلْقَى اللَّهَ غَدًا مُسْلِمًا فَلْيُحَافِظْ عَلَى
هَؤُلَاءِ الصَّلَوَاتِ حَيْثُ يُنَادَى بِهِنَّ فَإِنَّ اللَّهَ

شَرَعَ لِنَبِيِّكُمْ -صلى الله عليه وسلم- سُنَنَ
الْهُدَى وَإِنَّهُنَّ مِنْ سُنَنِ الْهُدَى وَلَوْ أَنَّكُمْ
صَلَّيْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ كَمَا يُصَلِّي هَذَا الْمُتَخَلِّفُ
فِي بَيْتِهِ لَتَرَكْتُمْ سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ وَلَوْ تَرَكْتُمْ سُنَّةَ
نَبِيِّكُمْ لَضَلَلْتُمْ وَمَا مِنْ رَجُلٍ يَتَطَهَّرُ فَيُحْسِنُ
الطُّهُورَ ثُمَّ يَعْمِدُ إِلَى مَسْجِدٍ مِنْ هَذِهِ الْمَسَاجِدِ
إِلاَّ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِكُلِّ خَطْوَةٍ يَخْطُوهَا حَسَنَةً
وَيَرْفَعُهُ بِهَا دَرَجَةً وَيَحُطُّ عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةً وَلَقَدْ
رَأَيْتُنَا وَمَا يَتَخَلَّفُ عَنْهَا إِلاَّ مُنَافِقٌ مَعْلُومُ
النِّفَاقِ وَلَقَدْ كَانَ الرَّجُلُ يُؤْتَى بِهِ يُهَادَى بَيْنَ
الرَّجُلَيْنِ حَتَّى يُقَامَ فِي الصَّفِّ

(जो शख़्स इस बात का ख़्वाहिशमंद हो कि कल मुसलमान हो कर (बन कर) अल्लाह तआला से मुलाक़ात करे उसे चाहिए की वह नमाज़ को मस्जिद में अदा करे, क्योंकि अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी को हिदायत के तरीक़े सिखाए और नमाज़ की मुहाफ़िज़त इन्हीं में से है, अगर तुम घरों में नमाज़ पढ़ने लगो

जैसा कि यह पीछे रहने वाला पढ़ता है तो तुम अपने नबी की सुन्नत तर्क करने वाले होगे, और अगर तुम ने अपने नबी ﷺ की सुन्नत को छोड़ दिया तो तुम गुमराह हो जाओगे, जो शख़्स अच्छी तरह कामिल वज़ू कर मस्जिद की तरफ़ चले, तो अल्लाह तआला उस के हर कदम के बदले एक नेकी लिखता है, और एक दर्जा बुलंद करता है, और एक गुनाह मिटाता है, मैंने देखा कि जमात से वही शख़्स पीछे रहता था जो खुला मुनाफ़िक़ हो, और (मरीज़ या माज़ूर) आदमी का भी यह हाल था कि वह दो आदमियों के दरमियान घिसटते हुए मस्जिद आता था ताकि जमात के साथ नमाज़ अदा कर सके।

सही मुसलिम ही में अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है, कहते हैं कि एक नाबीना शख़्स ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास कोई शख़्स नहीं जो मस्जिद पहुँच सके तो क्या मुझे घर में नमाज़ पढ़ने की रुख़सत है? "नबी ﷺ ने उस से फ़रमाया: { هَل تَسمَع النِّدَاءِ بِالصَّلاةِ } क्या तुम अज़ान की आवाज़ सुनते हो? उस ने कहा: हाँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: فَاجِب फिर मस्जिद में हाज़िर हुआ करो।

मस्जिद में जमात के साथ नमाज़ पढ़ने के सिलसिले में बहुत सारी हदीसें हैं, हर मुसलमान पर ज़रूरी है कि इस का ख़्याल करे, इस की तरफ़ सबक़त करें, और आपस में हर एक दूसरे को तलक़ीन करे, अपनी औलाद, अपने घर वालों, पड़ोसियों और मुसलमानों के साथ उसे अदा करे, अल्लाह और उस के रसूल के अहकाम की इताअत की ख़ातिर, और मुनाफ़िक़ीन की मुशाबिहत से बचने की ख़ातिर जिन का अल्लाह ने बड़ी मज़्मूम सिफ़ात के साथ ज़िक्र किया है, और उनमें निहायत मज़्मूम सिफ़त नमाज़ के सिलसिले में सुस्ती करना है, अल्लाह तआला का इरशाद है:

إِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ يُخَادِعُونَ اللهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُواْ إِلَى الصَّلاَةِ قَامُواْ كُسَالَى يُرَآؤُونَ النَّاسَ وَلاَ يَذْكُرُونَ اللهَ إِلاَّ قَلِيْلاً مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذَلِكَ لاَ إِلَى هَؤُلاء وَلاَ إِلَى هَؤُلاء وَمَن يُضْلِلِ اللهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيْلاً

(अन-निसा:१४२-१४३)

(बेशक मुनाफ़िक़ अल्लाह से चाल-बाज़ियाँ कर रहे हैं, और वह उन्हें इस चाल बाज़ी का बदला देने वाला है और जब वह नमाज़

को खड़े होते हैं तो बड़ी काहिली की हालत में खड़े होते हैं, सिर्फ़ लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह तआला का ज़िक्र बराए नाम करते है, वह कुफ़्र व ईमान के दरमियान सही फ़ैसला करने में मुतरद्दिद हैं, न पूरे इन की तरफ़ हैं न सही तौर पर उन की तरफ़, और जिसे अल्लाह तआला गुमराही में डाल दे तो तुम उस के लिए कोई राह-ए-हिदायत न पाओगे)

नमाज़ बाजमात अदा करने से पीछे रहना नमाज़ को बिल्कुल्लिया छोड़ने का अहम तरीन सबब है, और यह मालूम है कि नमाज़ छोड़ना कुफ़्र, गुमराही और इस्लाम से ख़ारिज हो जाना है, नबी ﷺ ने फ़रमाया:

بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ تَرْكُ الصَّلَاةِ

(मुसलिम)

(मोमिन आदमी और कुफ़्र व शिर्क के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ छोड़ना है)

नीज़ नबी ﷺ ने फ़रमाया:

الْعَهْدُ الَّذِي بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلَاةُ فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ

(हमारे और उन के दरमियान अहद व मीसाक़ नमाज़ है जिस ने इस को छोड़ा उस ने कुफ़्र किया)

नमाज़ की अहमियत, उस के वजूब, मशरूअ तरीक़े पर इस की अदायगी और इसके छोड़ने के सिलसिले में वईद की आयतें और हदीसें बहुत हैं।

मुसलमान पर ज़रूरी है कि वह अल्लाह और रसूल की इताअत करते हुए नीज़ अल्लाह के ग़ज़ब और अज़ाब से डरते हुए नमाज़ की औक़ात के साथ पाबन्दी करे और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अल्लाह के घरों में अपने मुसलमान भाइयों के साथ अदा करें।

जब भी हक़ ज़ाहिर हो जाए और दलीलें मालूम हो जाएं तो फिर उसे छोड़ कर किसी और की बात मानना सही नहीं, अल्लाह तआला का इरशाद है:

فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ
إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ ذَلِكَ
خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلاً

(अन-निसा:59)

(अगर किसी चीज़ में तुम्हारे दरमियान इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसे लौटाओ अल्लाह और रसूल की तरफ़ अगर तुम्हारा

अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान है, यह बेहतर है, और ब-एतेबार-ए-अंजाम बहुत अच्छा है)

अल्लाह तआला का इरशाद है :

فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ
فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

(अन-नूर:६३)

सुनो! जो लोग रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े या उन्हें दर्दनाक अज़ाब न आ पहुंचे।

जमात के साथ नमाज़ अदा करने में बहुत सारे फ़वायद और बहुत सारी मस्लिहतें हैं जो अहल-ए-नज़र से पोशीदा नहीं हैं, जैसे बाहिमी तआरुफ़, ख़ैर व तक़वा पर आपसी तआवुन, हक़ की तलक़ीन और उस पर सब्र करना, पीछे रहने वाले की तश्जीअ, बे-इल्म की तालीम, मुनाफ़िक़ीन से दूर रहना और उन्हें रंज व ग़म में मुब्तिला करना, अल्लाह के बन्दों में शआयर को बुलंद करना और क़ौल व अमल के ज़रिए अल्लाह की तरफ़ दावत देना आदि।

अल्लाह से दुआ है कि मुझे और आप को दुनिया और आख़िरत की भलाई की तौफ़ीक़ अता करे, और हम सब को अपने नफ़्स की शरारत, और बुरे आमाल और कुफ़्र व मुनाफ़िक़ीन की मुशाबिहत से बचाए, आमीन!

वज़ू,
ग़ुस्ल,
नमाज़

शैख़ इब्न-ए-उसैमीन

वज़ू, गुस्ल, नमाज़

वज़ू: पाकी हासिल करने का तरीक़ा है जो हदस-ए-असग़र (जैसे पेशाब, पाख़ाना, हवा का ख़ुरूज, गहरी नींद और ऊँट का गोश्त खाने) से वाजिब होता है।

वज़ू का तरीक़ा

(१) दिल से वज़ू की निय्यत करें, ज़बान से न कहें, क्योंकि नबी ﷺ ने न तो नमाज़ और वज़ू में ज़बान से निय्यत की और न ही किसी और इबादत में, अल्लाह तआला दिल की हालत जानता है, लिहाज़ा ज़बान से अल्लाह को ख़बर देने की ज़रूरत नहीं।

(२) "बिस्मिल्लाह" कहें।

(३) अपनी दोनों हथेलियों को तीन बार धोएं।

(४) तीन बार कुल्ली करें और नाक में पानी डालें।

(५) फिर तीन मर्तबा चेहरा धोएं, एक कान से दूसरे कान तक चौड़ाई में और सर के बालों की इब्तिदा से दाढ़ी के आख़िरी हिस्से तक लम्बाई में।

(६) दोनों हाथों को तीन मर्तबा धोएं, उंगलियों के सिरे से कोहनियों तक, पहले दायाँ हाथ फिर बायाँ।

(७) एक मर्तबा सर का मसह करें, दोनों हाथों को तर कर के सर के अगले हिस्से से शुरू करें और आख़िर तक ले जाएं फिर उसी जगह वापस ले आएं।

(८) एक बार कानों का मसह करें, दोनों शहादत की उंगलियाँ कानों में दाख़िल करें और अंगूठों से कानों के ज़ाहिरी हिस्से पर मसह करें।

(९) फिर दोनों पैरो को उंगलियों से सिरे से टख़नों तक तीन मर्तबा धोएं, पहले दाहिना पैर फिर बायाँ।

ग़ुस्ल

ग़ुस्ल: वह तहारत है जो हदस-ए-अकबर (मसलन हैज़ और जनाबत) से वाजिब होती है।

ग़ुस्ल का तरीक़ा:

(१) दिल से ग़ुस्ल की निय्यत करें, ज़बान से कुछ न कहें।

(२) "बिस्मिल्लाह" कहें।

(३) फिर मुकम्मल वज़ू करें।

(४) सर पर पानी डालें, जब सर भीग जाए तो तीन मर्तबा जिस्म पर पानी बहाएं।

(५) सारे बदन को धोएं।

तयम्मुम

तयम्मुम: वह तहारत है जो पानी न मिलने या उस के इस्तेमाल से नुकसान पहुँचने की सूरत में वज़ू और ग़ुस्ल के बदले वाजिब होती है और यह मिट्टी के ज़रिए हासिल की जाती है।

तयम्मुम का तरीक़ा:

वज़ू या ग़ुस्ल जिस के बदले तयम्मुम करना मक़सूद हो उस की निय्यत करें, फिर ज़मीन पर या धूल पड़ी दीवार पर अपने दोनों हाथ मारें और उस से अपने चेहरे और दोनों हथेलियों को मल ले।

नमाज़: अक़्वाल व अफ़आल पर मुश्तमिल एक इबादत है जिस का पहला रुक्न तकबीर है और आख़िरी रुक्न सलाम। जब आदमी नमाज़ का इरादा करे अगर हदस-ए-असग़र हो तो सब से पहले वज़ू करे, और अगर हदस-ए-अकबर हो तो ग़ुस्ल करे, अगर पानी मयस्सर न हो या उस के इस्तेमाल से ज़रर का अंदेशा हो तो तयम्मुम करे, अपना बदन, कपड़ा और नमाज़ की जगह को निजासत से पाक करे।

नमाज़ की कैफ़ियत:

१. अपने पूरे जिस्म से बग़ैर इन्हेराफ़ व इल्तेफ़ात क़िबला का इस्तिक़बाल करे।

२. जो नमाज़ पढ़ना मक़सूद हो उस की निय्यत करे, ज़बान से न कहे।

३. फिर तकबीर-ए-तहरीमा यानी "अल्लाहु अकबर" कहे, और तकबीर के वक़्त अपने दोनों हाथों को कन्धों के बराबर उठाए।

४. फिर दायीं हथेली को बायीं हथेली की पुष्त पर सीने पर रखे।

५. फिर दुआ-ए-इस्तिफ़्ताह पढ़े और कहे:

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اَللّٰهُمَّ نَقِّنِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى
الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ
بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ

(सही मुसलिम:598)

(ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे गुनाहों के दरमियान दूरी कर दे जैसे दूरी तू ने मुशरिक और मग़रिब के दरमियान रखी है, या इलाही! मुझ को मेरे गुनाहों से ऐसा पाक कर दे जैसा कि सफ़ेद कपड़ा मैल से पाक किया जाता है, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से पानी बर्फ़ और ओलों से धो दे)

या यह दुआ पढ़े:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى
جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

(सुनन अबीदाऊद:775)

(ऐ अल्लाह! तू पाक है, हम पाकी बयान करते हैं तेरी तारीफ़ के साथ और बा-बरकत है तेरा नाम और बुलंद है तेरी बुज़ुरगी, और तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं)

६. फिर इस्तेआज़ा यानी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

७. फिर बिस्मिल्लाह कहे और सुर-ए-फ़ातिहा पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۙ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ
مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۙ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ
ۙ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ

اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ
وَلَا الضَّآلِّيۡنَ

(शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है, सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का पालने वाला है, बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है, बदले के दिन यानी (क़्यामत) का मालिक है, हम सिर्फ़ तेरी इबादत करते हैं, और सिर्फ़ तुझ से ही मदद चाहते हैं, हमें सीधी और सच्ची राह पर चला, उन लोगों की राह जिन पर तूने इनाम किया, उन की राह नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल किया गया, और न ग़ुम-राहों की।

सुर-ए-फ़ातिहा ख़त्म करने के बाद आमीन कहे, यानी ऐ अल्लाह तू क़बूल फ़रमा ले।

८. सुरा-ए-फ़ातिहा के बाद जितना हो सके कुरआन पढ़े, नमाज़-ए-फज्र में क़िरात लम्बी करे।

९. फिर रुकू करे, यानी अल्लाह की ताज़ीम की ख़ातिर अपनी पीठ झुका दे, रुकू के वक़्त अल्लाहु अकबर कहे और अपने मोढों तक हाथ उठाए, रुकू का मस्नून तरीक़ा यह है की पीठ झुकाए और सर उस के बराबर हो, दोनों हाथ घुटनों पर इस तरह रखे की उँगलियाँ फैली हों।

१०. रुकू में तीन मर्तबा { سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمُ} (पाक है मेरा अज़मत वाला रब) कहे, और अगर यूँ कहे तो ज़्यादा बेहतर है: { سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِي} (पाक है तू या इलाही! हम तेरी पाकी बयान करते हैं तेरी तारीफ़ के साथ, या इलाही! मुझ को बख़्श दे)

११. फिर रुकू से { سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ} (जिस ने अल्लाह की तारीफ़ की उस की अल्लाह ने सुन ली) कहते हुए सर उठाए, और दोनों हाथों को कन्धों के बराबर उठाए। मुक़्तदी { سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ } ना कहे, बल्कि { رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ} कहे, (यानी ऐ अल्लाह हमारे रब तेरे ही लिए तमाम तारीफें हैं)

१२. रुकू से उठने के बाद यह दुआ पढ़ें:

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْئٍ بَعْدُ

(ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए तारीफ़ है, आसमानों भर, ज़मीन भर, और उस चीज़ भर जो तू इस के बाद चाहे)

१३. फिर अल्लाह के ख़ातिर खुशू इख़्तियार करते हुए पहला सजदा करे, सजदा करते वक़्त "अल्लाहु अकबर" कहे, और सात आज़ा पर सजदा करे, पेशानी नाक के साथ, दोनों हथेलियाँ, दोनों घुटने और दोनों पावँ पर, अपने दोनों बाज़ुओं को पहलू से दूर रखे, हाथों को ज़मीन पर ना बिछाए, अपनी उँगलियों को क़िबला रुख़ रखे।

१४. सजदे में तीन मर्तबा { سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى } कहे (पाक है मेरा बुलंद परवरदिगार) और अगर यह भी कहे { سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اَللَّهُمَّ اغْفِرْلِي } तो बेहतर है:
(ऐ अल्लाह! तू पाक है, और पाकी बयान करते हैं हम तेरी तारीफ़ के साथ, ऐ अल्लाह! बख़्श दे मुझ को)

१५. फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए सजदे से सर उठाए।

१६. दोनों सजदों के दरमियान बाएँ पैर पर बैठे, दायाँ पावँ खड़ा रखें, दायाँ हाथ दायें रान के किनारे घुटने से मुत्तसिल रखे, आख़िरी दो उँगलियाँ (ख़िंसिर,बिंसिर) समेट ले, शहादत की उँगली उठाए रखे और दुआ के वक़्त हरकत दे, बीच

की उँगली और अंगूठों को मिला कर हलक़ा बनाए, बायाँ हाथ बाएँ रान के किनारे घुटने से मुत्तसिल रखे और इस की उँगलियाँ फैली हों।

१७. दोनों सजदों के दरमियान बैठ कर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ
وَاجْبُرْنِيْ وَعَافِنِيْ

(ऐ मेरे रब! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत दे, मुझे रिज़्क़ दे, मेरे नुक़्स को पूरा कर और मुझे आफ़ियत दे)

१८. फिर पूरे खुशू के साथ पहले की तरह "अल्लाहु अकबर" कहते हुए दूसरा सजदा करे।

१९. फिर दूसरे सजदे से "अल्लाहु अकबर" कहता हुआ इसी तरह बैठ जाए जिस तरह दोनों सजदों के दरमियान बैठा था।

२०. इस जलसे में तशह्हुद पढ़े और यूँ कहे:

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ

عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

(ज़बान की इबादत, बदन की इबादत, और माल की इबादत सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए है, ऐ नबी! तुम पर सलामती हो, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों, सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ इस के बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह! रहमत भेज मुहम्मद ﷺ पर और आल-ए-मुहम्मद पर जैसे तूने रहमत भेजी इब्राहीम और आल-ए-इब्राहीम पर, बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल

बुज़ुरगी वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत भेज मुहम्मद ﷺ पर और आल-ए-मुहम्मद पर जैसे बरकत भेजी तूने इब्राहीम और आल-ए-इब्राहीम पर, बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल बुज़ुरगी वाला है)

फिर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ

(मैं जहन्नुम के अज़ाब से, क़ब्र के अज़ाब से, ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से और दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ)

इस के बाद दुनिया व आख़िरत की भलाई की जो चाहे दुआ करे।

२१. फिर "अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह" कहते हुए दायें और बाएं सलाम फेरे।

२२. अगर नमाज़ तीन या चार रकात वाली हो तो तशह्हुद-ए-अव्वल में सिर्फ़ अत्तहियात { اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ } तक पढ़े।

२३. फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ खड़ा हो जाए और अपने दोनों हाथ कन्धों तक उठाए।

२४. बक़िया नमाज़ भी दूसरी रकात ही की तरह अदा करे, अलबत्ता क़याम में सिर्फ़ सुरा-ए-फ़ातिहा पढ़े।

२५. फिर तवर्रुक करते हुए बैठ जाए इस तरह कि दायाँ पैर खड़ा रखे और बायाँ पैर दायें पिंडली के नीचे से निकाल ले और ज़मीन पर आराम से बैठ जाए, और दोनों हाथों को दोनों रानों पर पहले तशह्हुद की तरह रखे।

२६. इस क़ादा में मुकम्मल तशह्हुद यानी अत्तहियात, दरूद और दुआएं पढ़े।

२७. फिर "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहते हुए दायें सलाम फेरे और इसी तरह बाएँ भी करे।

नमाज़ में मकरूह चीज़ें

१. नमाज़ में सर या निगाहें इधर उधर फेरना मकरूह है, और आसमान की तरफ़ निगाह उठाना हराम है।

२. ग़ैर ज़रूरी (फिज़ूल) और बेकार हरकतें करना मकरूह है।

३. ऐसी चीज़ें भी साथ रखना मकरूह है जिस से नमाज़ी की तवज्जा हट जाए जैसे कोई वज़नी या रंगीन चीज़।

४. कमर पर हाथ रखना भी मकरूह है।

नमाज़ को बातिल करने वाली चीज़ें

१. जान-बूझ कर थोड़ी गुफ़्तगू करने से भी नमाज़ बातिल हो जाती है।

२. क़िबला के बजाए पूरे जिस्म को किसी और तरफ़ फेर लेने से भी नमाज़ बातिल हो जाती है।

३. हवा निकलने और गुस्ल या वज़ू वाजिब करने वाली हर चीज़ से नमाज़ बातिल हो जाती है।

४. ग़ैर ज़रूरी मुसलसल ज़्यादा हरकत करने से भी नमाज़ बातिल हो जाती है।

५. हंसी से भी नमाज़ बातिल हो जाती है ख़्वाह थोड़ी ही क्यूँ न हो।

६. जान-बूझ कर रुकू, सजदा, क़याम या क़ाअदा ज़्यादा करने से भी नमाज़ बातिल हो जाती है।

७. जान-बूझ कर अरकान की अदायगी के लिए इमाम से सबक़त करने से भी नमाज़ बातिल हो जाती है।

सजदा-ए-सहु के अहकाम

१. अगर नमाज़ी भूल कर नमाज़ में रुकू, सजदा, क़याम या क़ाअदा का इज़ाफ़ा कर दे तो सलाम फेर कर नमाज़ से फारिग़ होने के बाद इस भूलने के एवज़ दो सजदा करे और फिर दुबारा सलाम फेरे।

जैसे: अगर ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहा हो और पाँचवीं रकात के लिए खड़ा हो गया और फिर उसे याद आ गया या किसी ने याद-दहानी करा दी तो वह बग़ैर "अल्लाहु अकबर" कहे बैठ जाए और आख़िरी तशह्हुद पढ़ कर सलाम फेर दे, फिर सजदा करे और सलाम फेर दे, इसी तरह अगर ज़्यादती का इल्म नमाज़ से फराग़त के बाद हो सका तो भी दो सजदा करे और सलाम फेर दे।

२. अगर नमाज़ मुकम्मल होने से पहले भूल कर सलाम फेर दिया, फिर जल्द ही याद आ गया, या किसी ने याद दिला दिया इस तरह कि नमाज़ के छूटे हुए हिस्से को नमाज़ के पहले हिस्से पर बिना कर सकता है तो बाक़ी नमाज़ इसी पर पूरी करे, और सलाम फेरे फिर सहु के दो सजदा करने के बाद दुबारा सलाम फेरे।

जैसे: ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहा था और भूल कर तीसरी रकात के बाद सलाम फेर दिया, फिर याद आ गया तो इसी के साथ चौथी रकात मिला कर दुबारा सलाम फेर ले, और सहु के दो सजदा करने के बाद फिर सलाम फेर ले, लेकिन अगर लम्बे वक़्फ़ा के बाद याद आया तो पूरी नमाज़ फिर से अदा करेगा।

३. अगर वजिबात-ए-नमाज़ में से कोई चीज़ जैसे तशह्हुद-ए-अव्वल वग़ैरह भूल गया तो इस की तलाफ़ी के लिए सलाम फेरने से पहले दो सजदा करे, इस के इलावा उस पर कोई और चीज़ नहीं, अगर जा-ए-वक़ूअ से मुफारिक़त से पहले याद आगया तो पूरा कर ले और उस पर कुछ नहीं, और अगर जा-ए-वक़ूअ से मुफारिक़त के बाद मगर क़रीब ही याद आ गया तो वापस हो कर मुकम्मल करलेगा।

जैसे: तशह्हुद-ए-अव्वल भूल गया और तीसरी रकात के लिए मुकम्मल तौर पर खड़ा हो गया तो दुबारा नहीं बैठेगा, बल्कि सलाम फेरने से पहले सहु के दो सजदे करेगा, और तशह्हुद के लिए बैठा मगर तशह्हुद पढ़ना भूल गया और खड़े होने से पहले याद आ गया तो तशह्हुद पढ़ेगा और अपनी नमाज़ मुकम्मल करेगा। उस पर कोई हर्ज नहीं, इसी तरह अगर तीसरी रकात के लिए खड़ा हुआ मगर मुकम्मल तौर पर खड़े होने से पहले याद आ गया तो पलट कर बैठ जायेगा और तशह्हुद पढ़ कर अपनी नमाज़ मुकम्मल करेगा, लेकिन कुछ उलमा का ख़्याल है कि ऐसी सूरत में सहु के दो सजदे करेंगे, क्योंकि खड़े हो कर उस ने अपनी नमाज़ में ज़्यादती कर दी थी, वल्लाहु आलम।

४. अगर नमाज़ में शक हो जाए कि दो रकात पढ़ा है या तीन, और कोई पहलू राजेह न मालूम हो तो यक़ीन यानी कम पर बिना करेगा, और सलाम फेरने से पहले सहु के दो सजदे करेगा।

जैसे: ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहा था और दूसरी रकात में शक हो गया कि यह दूसरी रकात है या तीसरी, और कोई राजेह पहलू न मालूम हो तो उस को दूसरी रकात मान कर बाक़ी

नमाज़ मुकम्मल करे और सलाम फेरने से पहले दो सजदा करे।

५. अगर नमाज़ में शक हो जाए कि दो रकात पढ़ा है या तीन और कोई पहलू राजेह मालूम हो तो ग़ालिब गुमान पर बिना करेगा ख़्वाह कम हो या ज़्यादा और सलाम फेरने के बाद दो सजदे करेगा और सलाम फेर देगा।

जैसे: ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहा था और दूसरी रकात में शक हो गया कि यह दूसरी रकात है या तीसरी, और ग़ालिब गुमान यह हुआ कि तीसरी रकात है तो उसे तीसरी ही मान कर बाक़ी नमाज़ उसी पर मुकम्मल करे और सलाम फेर दे, फिर सहु के दो सजदे करे और सलाम फेरे।

लेकिन अगर शक नमाज़ से फ़राग़त के बाद हो तो इस पर कोई तवज्जा न दे, मगर उसी सूरत में जब उसे किसी चीज़ का यक़ीन हो जाए।

और अगर उसे अकसर व बेशतर शक होता रहता हो तो शक की तरफ़ तवज्जा बिलकुल न दे, क्योंकि यह शैतानी वस्वसा है, वल्ल्लाहू आलम।

मरीज़ की तहारत का तरीक़ा

१. मरीज़ पर ज़रूरी है कि पानी से पाकी हासिल करे, अगर हदस-ए-असग़र हो तो वज़ू करे और हदस-ए-अकबर हो तो ग़ुस्ल करे।

२. अगर किसी मजबूरी की वजह से पानी इस्तेमाल न कर सकता हो तो मसलन पानी मयस्सर न हो या मर्ज़ के बढ़ जाने का ख़ौफ हो, या शिफ़ा में ताख़ीर हो सकती हो तो तयम्मुम कर ले।

३. तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि अपने दोनों हाथ पाक ज़मीन पर एक बार मारे और उसको अपने चेहरे पर फेर ले, फिर दोनों हथेलियों को एक दूसरे पर मल ले।

४. अगर ख़ुद तहारत न कर सकता हो तो कोई दूसरा शख़्स उसे वज़ू या तयम्मुम कराए।

५. अगर वज़ू के किसी उज़्व में ज़ख़्म हो और पानी से धोना नुक़सान-दह हो तो उस पर मसह कर ले, इस का तरीक़ा यह है की हाथ को पानी से भिगो कर उस पर फेरे, और अगर मसह भी नुक़सान-दह हो तो उस के लिए तयम्मुम करे।

६. अगर कुछ आज़ा पर पट्टी या प्लास्टर हो तो उसे धोने के बजाए मसह करे, तयम्मुम की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मसह ग़ुस्ल का बदल है।

७. दीवार पर तयम्मुम करना या किसी ऐसी पाक चीज़ पर जिस पर ग़ुबार हो जायज़ है, अगर दीवार किसी ऐसी चीज़ से प्लास्टर की हुई हो जो मिट्टी के जिंस से नहीं है तो उस पर तयम्मुम न करे, हाँ अगर उस पर ग़ुबार हो तो जायज़ है।

८. अगर ज़मीन पर या दीवार पर किसी ऐसी चीज़ पर जिस पर ग़ुबार हो तयम्मुम करना मुश्किल हो तो बर्तन या कपड़े में मिट्टी रख कर उस पर तयम्मुम किया जा सकता है।

९. अगर किसी नमाज़ के लिए तयम्मुम करे और दूसरी नमाज़ तक उस की तहारत बाक़ी रहे तो उस तयम्मुम से दूसरी नमाज़ पढ़ी जा सकती है, दूसरी नमाज़ के लिए तयम्मुम ज़रूरी नहीं, क्योंकि उस की तहारत बाक़ी है उसे ख़त्म करने वाली चीज़ पेश नहीं आई।

१०. मरीज़ पर ज़रूरी है कि अपने जिस्म को तमाम निजासतों से पाक करे, अगर मुमकिन न हो तो उसी हाल में नमाज़ पढ़ ले, उसकी नमाज़ सही हो जायेगी, उसे दुबारा लौटाने की ज़रूरत नहीं है।

११. मरीज़ पर ज़रूरी है कि पाक कपड़ों में नमाज़ पढ़े अगर कपड़े नापाक हो जायें तो उनका धोना या पाक कपड़े में तबदील करना ज़रूरी है, अगर यह मुमकिन न हो तो उसी हालत में नमाज़ पढ़ ले उस की नमाज़ सही होगी, उस का इआदा नहीं है।

१२. मरीज़ को चाहिए कि पाक चीज़ पर नमाज़ पढ़े, अगर उस की जगह गंदी हो जाए तो उसे धोना या किसी पाक चीज़ से बदलना ज़रूरी है, या उस पर कोई चीज़ बिछा दी जाए, और अगर मुमकिन न हो तो उसी हाल में नमाज़ पढ़ ले, उस की नमाज़ सही होगी, उसे दुबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं।

१३. तहारत न कर सकने के उज़्र से नमाज़ को वक़्त से मुअख़्खर करना दुरुस्त नहीं है, बल्कि जिस मुमकिना हद तक तहारत हासिल कर सकता हो करे, और वक़्त पर नमाज़ अदा करे ख़्वाह उस के बदन, कपड़े या जगह पर ऐसी निजासत हो जिस का इज़ाला नामुमकिन हो।

मरीज़ की नमाज़ का तरीक़ा

१. मरीज़ को चाहिए कि फ़र्ज़ नमाज़ खड़ा हो कर अदा करे, अगरचे झुका हुआ हो या अगर सहारे की ज़रूरत हो तो दीवार या छड़ी वग़ैरह पर टेक लगाए हुए अदा कर सकता है।

२. अगर खड़े होने की ताक़त न हो तो बैठ कर नमाज़ पढ़े, अफज़ल यह है की क़याम और रुकू की जगह चार ज़ानू हो कर बैठे।

३. अगर बैठ कर नमाज़ न पढ़ सकता हो तो अपने पहलू पर क़िबला रुख़ हो कर नमाज़ पढ़े, दाहना पहलू अफज़ल है, अगर क़िबला की तरफ़ रुख़ न हो सके तो जिधर भी रुख़ हो उसी हाल में नमाज़ अदा करे, उस की नमाज़ सही होगी, उसे दुबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं।

४. पहलू पर नमाज़ पढ़ना मुमकिन न हो तो चित लेट कर नमाज़ पढ़े और अपने पावँ क़िबला की तरफ़ करे, सर थोड़ा सा बुलंद करना अफज़ल है ताकि क़िबला की तरफ़ चेहरा हो जाए, अगर पावँ क़िबला की तरफ़ करना मुमकिन

न हो तो जिधर भी हो नमाज़ अदा कर ले, नमाज़ सही है इआदा की ज़रूरत नहीं है।

५. मरीज़ पर नमाज़ में रुकू और सजदा करना ज़रूरी है, अगर ताक़त न हो तो सर के ज़रिए उनका इशारा करे, सजदे के लिए रुकू से ज़्यादा झुके, अगर रुकू कर सकता हो और सजदा न कर सकता हो तो रुकू करे और सजदे के लिए इशारा करे, और अगर सजदा कर सकता हो रुकू न कर सकता हो तो रुकू के लिए इशारा करे और सजदा मुकम्मल करे।

६. अगर रुकू और सजदे में सर का इशारा न कर सकता हो तो आँखों के ज़रिए इशारा करे, रुकू के लिए थोड़ी देर तक आँख बंद करे और सजदे के लिए उस से ज़्यादा वक़्त तक बंद करे, उंगली के ज़रिए इशारा करना जैसा कि कुछ मरीज़ करते हैं सही नहीं है, किताब व सुन्नत और अहल-ए-इल्म के अक़वाल में इस की कोई भी दलील नहीं है।

७. अगर सर से इशारा न कर सकता हो न आँख से तो सिर्फ़ दिल के ज़रिए नमाज़ अदा करे, तकबीर कहे, क़िरात करे, रुकू, सजदा, क़याम और बैठने की दिल से निय्यत करे, हर इनसान को उस की निय्यत का अजर मिलेगा।

८. मरीज़ पर ज़रूरी है कि हर नमाज़ उस के वक़्त पर अदा करे, हर वह चीज़ जो वाजिब हो उस पर जितनी क़ुदरत हो उतना अदा करे, हर नमाज़ उस के वक़्त में पढ़ना मुश्किल हो तो ज़ुहर, असर और मग़रिब, इशा को जमा कर सकता है, चाहे जम-ए- क़दीम करे यानी असर को ज़ुहर के साथ (ज़ुहर के वक़्त में) और इशा को मग़रिब के साथ (मग़रिब के वक़्त में) पढ़े, या जम-ए-ताख़ीर करे यानी ज़ुहर को असर के साथ (असर के वक़्त में) और मग़रिब को इशा के साथ (इशा के वक़्त में) अदा करे, जिस में उस को सहूलत हो, फज्र की नमाज़ पहले या बाद की नमाज़ के साथ जमा नहीं की जा सकती।

९. अगर मरीज़ हालत-ए-सफ़र में हो यानी किसी दूसरे मुल्क में इलाज करा रहा हो तो वह चार रकात वाली नमाज़ में क़स्र करेगा, अपने वतन लौटने तक ज़ुहर, असर और इशा की नमाजें दो रकात अदा करेगा ख़्वाह मुद्दत-ए-सफ़र तवील हो या मुख़्तसर।

नमाज़
की
शर्तें

इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ की नौ शर्तें हैं:

(१) इस्लाम

(२) अक़्ल

(३) तमीज़

(४) बावज़ू होना

(५) निजासत से पाकी

(६) शर्मगाह की पर्दा पोशी

(७) वक़्त का दाख़िल होना

(८) क़िबला रुख़ होना

(९) नियत

पहली शर्त: इस्लाम है, इस की ज़िद्द कुफ़्र है और काफ़िर ख़्वाह कोई भी अमल करे उस का हर अमल मरदूद है, इस की दलील अल्लाह का यह फ़रमान है:

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ أَن يَعْمُرُواْ مَسَاجِدَ اللهِ شَاهِدِيْنَ عَلَى أَنفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أُوْلَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ

(अत-तौबा:17)

(मुनासिब नहीं कि मुशरिक अल्लाह तआला की मस्जिदों को आबाद करें इस हाल में कि वह ख़ुद अपने कुफ़्र के आप ही गवाह हैं, उन के आमाल ग़ारत व अकारत हैं, और वह दायमी तौर पर जहन्नमी हैं)

नीज़ अल्लाह तआला का यह क़ौल:

وَقَدِمْنَا إِلَى مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاء مَّنثُوراً

(अल-फ़ुर्क़ान:23)

(और उन्होंने जो आमाल किए थे हम ने उन की तरफ़ बढ़ कर उन्हें परागंदा ज़र्रों की तरह कर दिया)

दूसरी शर्त: अक़्ल है, इस की ज़िद्द जुनून है, (मजनूँ) पागल जब तक होश में न आजाए मुकल्लफ़ नहीं है, इस की दलील यह हदीस है:

رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاَثَةٍ: النَّائِمِ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ،
وَالْمَجنُون حَتَّى يُفيق، الصَّغيرِ حَتَّى يَبلُغ

(अहमद:6/144, अबू-दाऊद:4398,इब्ने माज़ा:2041,
निसाई:3432,
इमामहाकिम ने इसे सही करार दिया है:2/59)

(तीन लोगों से क़लम उठा दिया गया है, सोने वाला जब तक कि जाग न जाए, मजनूँ जब तक कि होश में न आजाए, बच्चा जब तक बालिग़ न हो जाए)

तीसरी शर्त: तमीज़ है, इस की ज़िद्द बचपन है, इस की हद सात साल है, फिर नमाज़ का हुक्म दिया जायेगा, नबी ﷺ का इरशाद है:

مُرُوا أبنَائَكُم بِالصّلاةِ لِسَبع وَاضرِبُوهُم عَلَيهَا
لِعَشر وَفَرّقُوا بَينَهُم فِى المَضَاجِع

(अपने बच्चों को सात साल की उम्र में नमाज़ का हुक्म दो, दस साल की उम्र में इस के लिए उन्हें मारो, और उन के बिस्तर अलग कर दो)

चौथी शर्त: हदस दूर करना यानी वज़ू करना है, वज़ू वाजिब करने वाली चीज़ हदस है और वज़ू सही होने के लिए दस शर्तें हैं:

(1) इस्लाम

(2) अक़्ल

(3) तमेंज़

(4) इख़्तिताम तक वज़ू तोड़ने की निय्यत न करना

(5) सबब-ए-वज़ू का ख़त्म हो जाना

(6) वज़ू से पहले पानी, पत्थर ढ़ेले वगैरह से पाकी हासिल कर लेना (7) पानी का पाक और मुबाह होना

(8) जिल्द तक पानी के पहुँचने में हायल रुकावट को दूर करना

(9) नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो जाना, यह शर्त उस के लिए है जिस की नापाकी दायमी हो

इस के 6 फराइज़ हैं:

(१) चेहरा धोना, इसी में कुल्ली करना और नाक में पानी लेना भी शामिल है, चेहरा धोने के हुदूद यह हैं: सर के बालों के उगने

की जगह से ठोढ़ी तक, और चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक

(२) दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोना

(३) पूरे सर का कानों समेत मसह करना

(४) दोनों पैरो का टख़नों समेत धोना

(५) तरतीब का लिहाज़ रखना

(६) तसलसुल (यानी पे-दर-पे धोना)

इस की दलील अल्लाह तआला का यह क़ौल है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوا بِرُؤُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ

(अल-माईदा:6)

(ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुंह को और अपने हाथों को कोहनियों समेत धो लो, अपने सिरों का मसह करो और अपने पाँव को टख़नों समेत धो लो)

तरतीब की दलील यह हदीस है:

ابدَءُ وا بِمَا بَدَاَاللّٰهُ بِه

(अल्लाह ने जिस से शुरू किया तुम भी उसी से शुरू करो)

तसलसुल की दलील यह हदीस है कि नबी ﷺ ने एक आदमी के कदम में दिरहम के बराबर ख़ुश्की देखी जिसे पानी नहीं पहुँचा था तो आप ने दुबारा उसे वज़ू करने का हुक्म दिया। (दार-क़ुतनी:१०९१)

अगर याद हो तो "बिस्मिल्लाह" कहना वाजिब है।

(इस की दलील अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ की मारूफ़ रिवायत है:

لا صلاة لمن لا وضوء له، ولا وضوء لمن لم يذكر اسم الله عليه

(देखिए: मुसनद अहमद(२/४१८), अबू दाऊद(१०१), इब्नेमाज़ा(३९८)

वज़ू तोड़ने वाली चीज़ें आठ हैं:

(१) दोनों रास्तों (आगे या पीछे) से निकलने वाली निजासत

(२) जिस्म से निकलने वाली बहुत ज़्यादा निजासत

(३) होश चला जाना

(४) शहवत से औरत को छूना

(५) अगली या पिछली शर्म-गाह को बग़ैर किसी हायल के हाथ से छूना

(६) ऊँट का गोश्त खाना

(७) मय्यत को ग़ुस्ल देना

(८) इस्लाम से फिर जाना (अल्लाह हमें इस से महफ़ूज़ रखे)

पाँचवीं शर्त:

बदन, कपड़ों और जगह से निजासत दूर करना है, दलील अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ

(अल-मुद्दस्सिर:४)

[अपने कपड़ों को पाक रखिए]

छटी शर्त:

सत्र ढांकना, अहल-ए-इल्म का इस बात पर इज्मा है कि क़ुदरत के बावजूद नंगे नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ बातिल है, मर्द की सत्र नाफ़ से घुटने तक है, आज़ाद औरत का चेहरे के इलावा सारा जिस्म सत्र है, इस की दलील अल्लाह तआला का यह क़ौल है:

يَابَنِيٓ آدَمَ خُذُواْ زِيۡنَتَكُمۡ عِندَ كُلِّ مَسۡجِدٍ

(अल-आराफ:31)

(ऐ औलाद-ए-आदम! तुम मस्जिद की हर हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो)

सातवीं शर्त:

वक़्त का दाख़िल होना, इस की दलील यह हदीस है कि जिबरईल عَلَيْهِ السَّلَام ने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की अव्वल वक़्त और आख़िरी वक़्त में इमामत कराई और कहा:

يَا مُحَمَّد الصَّلَاةُ بَينَ هٰذَين الوَقتَين

(अबूदाऊद:३९३, अहमद:३/३०, तिरमिज़ी:१४९, हाकिम:१/१९३)

(ऐ मुहम्मद! नमाज़ इन दो वक़्तों के दरमियान है)

और अल्लाह तआला का यह क़ौल है:

إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتۡ عَلَى الۡمُؤۡمِنِينَ كِتَاباً مَّوۡقُوتاً

(मोमिनों पर नमाज़ वक़्त-ए-मुक़र्ररा पर फ़र्ज़ है)

औक़ात की दलील अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ
وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوداً

(अल-इसरा:78)

(नमाज़ क़ायम करो आफ़ताब के ढलने के वक़्त से ले कर रात की तारीकी तक और फ़ज्र का कुरआन पढ़ना भी, यक़ीनन फ़ज्र के वक़्त का कुरआन पढ़ना हाज़िर किया गया है)

आठवीं शर्त:

क़िबला रुख़ होना, इस की दलील अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ
قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ
شَطْرَهُ

(अल-बक़रा:144)

(हम आप के चेहरे को बार बार आसमान की तरफ़ उठते हुए देख रहे हैं, अब हम आप को इस क़िबला की जानिब मुतवज्जा

करदेंगे जिस से आप ख़ुश हो जायेंगे, आप का मुंह मस्जिद-ए-हराम की तरफ़ फेर लें और आप जहां कहीं हों अपना मुंह इसी तरफ़ फेरा करें)

नवीं शर्त:

निय्यत है, जिस की जगह दिल है, ज़बान से कहना बिदअत है, इस की दलील यह हदीस है:

إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ، وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِءٍ مَا نَوَى

(बुखारी:1, मुसलिम:1907)

(आमाल का दार व मदार निय्यतों पर है और हर आदमी को उस की निय्यत के मुताबिक़ बदला मिलेगा)

नमाज़ के चौदह अरकान हैं:

(१) क़ुदरत हो तो खड़े होना

(२) तकबीर-ए-तहरीमा

(३) सूरा-ए-फ़ातिहा पढ़ना

(४) रुकू

(५) रुकू के बाद क़ौमा में खड़े होना

(६) सात आज़ा पर सजदा करना

(७) सजदा से सर उठाना

(८) दोनों सजदों के दरमियान बैठना

(९) तमाम अफ़आल में इत्मिनान व सुकून का होना

(१०) अरकान में तरतीब का होना

(११) आख़िरी तशह्हुद

(१२) तशह्हुद के लिए बैठना

(१३) नबी ﷺ पर दरूद पढ़ना

(१४) दोनों जानिब सलाम फेरना

पहला रुक्न:

क़ुदरत हो तो खड़े होना, इस की दलील अल्लाह तआला का यह क़ौल है:

حَافِظُواْ عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلاَةِ الْوُسْطَى
وَقُومُواْ لِلّهِ قَانِتِيْنَ

(अल-बक़रा:२३८)

(नमाज़ों की हिफाज़त करो, बिलख़ुसूस दरमियान वाली नमाज़ की और अल्लाह तआला के लिए बा-अदब खड़े रहा करो)

दूसरा रुक्न:

तकबीर-ए-तहरीमा, इस की दलील यह हदीस है:

تَحرِيمهَا التّكبِير وَتَحلِيلهَا التّسلِيم

(अबू दाऊद:६१/६१८, तिरमिज़ी:३, अहमद:१/१२३,१२९, इब्ने माज़ा:२७५.हाफिज़ इब्ने हजर ने कहा है कि असहाबे सुनन ने इसे सही सनद से जिक्र किया है)

(तकबीर नमाज़ के मासिवा चीज़ों को हराम करती है और सलाम उसे हलाल करता है)

इस के बाद दुआ-ए-इस्तिफ़्ताह पढ़नी चाहिए और यह सुन्नत है। दुआ-ए-इस्तिफ़्ताह यह है:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالىٰ جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

यानी ऐ अल्लाह! तेरी पाकी बयान करता हूँ जो कि तेरे जलाल के शायान-ए-शान है, और तेरी हम्द करता हूँ, तेरा नाम बहुत बा-बरकत है क्योंकि तेरे ज़िक्र से बरकत हासिल की जाती है,

तेरी अज़मत बड़ी बुलंद है, आसमान व ज़मीन में तेरे इलावा कोई माबूद-ए-बरहक़ नहीं

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ो का मतलब है मैं तेरी पनाह और तेरा सहारा चाहता हूँ, शैतान मरदूद के शर से हिफाज़त के लिए जो तेरी रहमत से धुतकारा गया, क्योंकि शैतान मेरे दीन और मेरी दुनिया में नुकसान पहुँचाने के दरपे है।

हर रकात में सुरा-ए-फ़ातिहा पढ़ना रुक्न है, जैसा कि हदीस में है:

لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

(बुखारी:७५६,मुसलिम:३९४)

(जिस ने सुरा-ए-फ़ातिहा न पढ़ी उस ने नमाज़ नहीं पढ़ी उस की नमाज़ नहीं हुई)

सुरा-ए-फ़ातिहा को "उम्मुल-क़ुरआन" क़ुरान की असास भी कहा जाता है, फिर "बिस्मिल्लाहिर रहमानि र्रहीम" कहे ताकि बरकत व मदद हासिल हो, "अल्हम्दुलिल्लाह" से मुराद सना (तारीफ़) है, अल्हम्द का अलिफ़ लाम इस्तिग्राक़ के लिए, यानी हर क़िस्म की तारीफ़ को शामिल है, लेकिन ऐसी खूबी जिस में

इंसान की ताक़त का दख़ल न हो जैसे जमाल वगैरा तो तारीफ़ को मदह कहते हैं न कि हम्द।

"रब्बुलआलमीन" रब से मुराद ख़ालिक़, माबूद, राज़िक़, मालिक, तसर्रुफ़ करने वाला, सारी मख़्लूक़ात की अपनी नेअमतों के ज़रिए परवरिश करने वाला, अल्लाह के सिवा तमाम चीज़ें आलम में शामिल हैं, वह सब का रब है, "अर्रहमान" सारी मख़्लूक़ात के लिए उस की रहमत आम है, "अर्रहीम" ऐसी रहमत जो मोमिनीन के लिए ख़ास है, इस की दलील अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيماً

(अल-अहज़ाब:४३)

[और अल्लाह तआला मोमिनों पर बहुत ही मेहरबान है]

"मालिक-ए-यौमिद्दीन" हिसाब और बदले का दिन, वह दिन जिस में हर शख़्स को उस के अच्छे और बुरे आमाल का बदला दिया जायेगा, इस की दलील अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ، يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئاً وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ

(अल-इन्फितार:१७-१९)

(तुझे क्या ख़बर है कि बदले का दिन क्या है, मैं फिर (कहता हूँ कि) तुझे क्या मालूम कि जज़ा और सज़ा का दिन क्या है, जिस दिन कोई शख़्स किसी शख़्स के लिए किसी चीज़ का मुख़्तार न होगा, और तमाम-तर अहकाम उस रोज़ अल्लाह ही के लिए होंगे)

रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

الْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ،
وَالْعَاجِزُ مَنْ أَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنَّى عَلَى اللَّهِ
الامَانِي

(अकलमंद वह है जो अपने नफ़्स के लिए ज़ख़ीरा-अन्दोज़ी करे और मौत के बाद के लिए अमल करे, और आजिज़ वह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात का मा-तहत बनता है और अल्लाह से उमीदें लगाता है)

“इय्याक-नअबुदु” हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते हैं, तेरे सिवा किसी की इबादत नहीं करते, यह अल्लाह और बन्दे के दरमियान का अहद है कि उस के इलावा किसी की इबादत न करे, “वइय्याक-नस्तईन” यह अल्लाह और बन्दे के दरमियान

का मुआहिदा है कि अल्लाह के इलावा किसी से मदद न मांगे, "इह्दिनससिरातल मुस्तक़ीम" हमारी हिदायत व रहनुमाई फ़रमा, इस पर साबित रख, सिरात से मुराद इस्लाम है, कुछ लोगों ने रसूल और क़ुरआन भी मुराद लिया है, मगर सभी मानी सहीह हैं, मुस्तक़ीम: जिस में किसी क़िस्म की कजी न हो, "सिरातल्लज़्ज़ीनाअनअमताअलैहिम" उन लोगों का रास्ता जिन पर तेरा इनाम हुआ, इस की दलील अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

وَمَن يُطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ
أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ
وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقاً

(अन-निसा:69)

(और जो शख़्स अल्लाह तआला की और रसूल ﷺ की फ़रमाँ-बर्दारी करे, वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह तआला ने इनाम किया है, जैसे नबी, सिद्दीक़, शहीद और नेक लोग, यह बेहतरीन रफीक़ हैं)

"ग़ैरिल्मग़्ज़ूबिअलैहिम" इस से मुराद यहूद हैं जिन्हों ने इल्म होने के बावजूद उस पर अमल नहीं किया, "वलज़्ज़्वाल्लीन" इस से

मुराद नसारा हैं जो जिहालत व गुमराही में रह कर अल्लाह की इबादत करते हैं (अल्लाह तआला से दुआ है कि तुम्हें उन के रास्ते से बचाए) गुमराह लोगों के मुतअल्लिक़ अल्लाह ने ज़िक्र किया:

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِيْنَ أَعْمَالاً، الَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعاً

(अल-कहफ़:१०४,१०३)

(कह दीजिए कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ कि ब-एतेबार-ए-आमाल के सब से ज़्यादा ख़सारे में कौन हैं, वह हैं जिन की दुनयवी ज़िंदगी की तमाम तर कोशिशें बेकार हो गईं और वह इसी गुमान में रहे कि वह बहुत अच्छे काम कर रहे हैं)

रसूल-ए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

لَتَتْبَعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ شِبْرًا شِبْرًا
وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ حَتَّى لَوْ دَخَلُوا جُحْرَ ضَبٍّ
تَبِعْتُمُوهُمْ قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ الْيَهُودُ
وَالنَّصَارَى قَالَ فَمَنْ

(बुख़ारी व मुसलिम)

(तुम अपने पहले लोगों के तरीक़े पर हू-बहू ज़रूर चलोगे, यहाँ तक कि अगर वह किसी गोह के सुराख़ में दाख़िल होंगे तो तुम भी दाख़िल होगे, लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! यहूद व नसारा मुराद हैं? आप ने कहा: उन के इलावा और कौन है)

दूसरी हदीस में आप ने फ़रमाया:

افتَرَقَت اليَهُود عَلَى إحدَى وَسَبعِين فِرقَة،
وَافتَرَقَت النّصَارَى عَلَى اثنَتَين وَسَبعِين
فِرقَة، وَسَتَفتَرق هٰذِه الأمّة عَلَى ثَلاث
وَسَبعِين فِرقَة كُلّها فى النّارِ إلّا وَاحِدَة، قُلنَا:
مَن هِي يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: مَن كَانَ عَلَى مِثلِ مَا
أنا عَلَيهِ وَأصحَابِي

(अहमद:२/३३२, अबुदाऊद:४५९६, तिरमिज़ी:२६४०, इब्ने-माज़ा: ३९९१, हाकिम:१२८/१, सहिहुल्जामेंअ:१०८२, सिल्सिल्येसहीहा:१४९२)

(यहूद इकहत्तर फ़िरक़ों में और नसारा बहत्तर फ़िरक़ों में तक़सीम हो गए थे, और यह उम्मत तिहत्तर फ़िरक़ों में तक़सीम होगी, सिवाए एक जमात के सभी जहन्नम में जायेंगे। हम ने कहा ऐ

अल्लाह के रसुल! यह कौन जमात होगी? आप ने फ़रमाया: जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर होगी) रुकू करना और रुकू के बाद क़ौमा में खड़े होना, सात आज़ा पर सजदा करना, सजदा से सर उठाना और दो सजदों के दरमियान बैठना भी अरकान में से हैं, इस की दलील अल्लाह तआला का यह क़ौल है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا

(अल-हज़:77)

(ऐ ईमान वालो! रुकू और सजदा करते रहो)

नबी ﷺ ने फ़रमाया:

أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ

(बुखारी:८०९/८१०, मुसलिम:४९०)

(मुझे हुक्म दिया गया कि मैं सात आज़ा पर सजदा करूँ)

तमाम अफ़आल की अदायगी में इत्मीनान मल्हूज़ रखना और अरकान को तरतीब से अदा करना, इस की दलील उस शख़्स की हदीस है जिस ने नमाज़ में गलती की थी, अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं:

بَينَمَا نَحنُ جلُوس عِندَ النَّبِيِّ صلى الله عليه
وسلم اِذ دَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ
صلى الله عليه وسلم فَقَالَ: ارجِعْ فَصَلِّ, فَإِنَّكَ
لَمْ تُصَلِّ. فَرَجَعَ فَصَلَّى كَمَا صَلَّى, ثُمَّ جَاءَ
فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ:
ارجِعْ فَصَلِّ, فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ - ثَلاثاً - فَقَالَ:
وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لا أُحسِنُ غَيْرَهُ, فَعَلِّمْنِي,
فَقَالَ: إِذَا قُمتَ إِلَى الصَّلاةِ فَكَبِّرْ, ثُمَّ اقْرَأْ مَا
تَيَسَّرَ معك مِنَ الْقُرْآنِ, ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ
رَاكِعاً, ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَعْتَدِلَ قَائِماً, ثُمَّ اسْجُدْ
حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِداً, ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ
جَالِساً. وَافْعَلْ ذَلِكَ فِي صَلاتِكَ كُلِّهَا

(बुखारी:757-2652)

(हम नबी ﷺ के पास बैठे हुए थे कि एक आदमी आया और नमाज़ पढ़ी, फिर नबी ﷺ को सलाम किया, आप ने

फरमाया: वापस जाओ और नमाज़ पढ़ो तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी, तीन मर्तबा उस ने ऐसा ही किया, फिर उस ने कहा: उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा, मैं इस से ज़्यादा नहीं जानता, आप मुझे सिखाइए, नबी ﷺ ने उस से फ़रमाया: जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो तकबीर कहो, फिर जितना मुमकिन हो क़ुरआन पढ़ो, फिर पुरे इत्मीनान से रुकू करो, फिर अच्छी तरह खड़े हो जाओ, फिर अच्छी तरह सजदा करो, फिर उठ जाओ और इत्मीनान से बैठ जाओ, इस तरह अपनी पूरी नमाज़ में करो)

आख़िरी तशह्हुद वाजिबी रुक्न है, जैसा कि इब्ने मसूद رضی اللہ عنہ की हदीस में है, फ़रमाते हैं: कि हम तशह्हुद फ़र्ज़ होने से पहले नमाज़ में इस तरह कहते थे:

السَّلَامُ عَلَى اللهِ مِنْ عِبَادِهِ، السَّلَامُ عَلَى جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ وَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم: لَا تَقُولُوا السَّلَامُ عَلَى اللهِ مِنْ عِبَادِهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّلَامُ وَلَكِنْ قُولُوا: التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ

اللهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا، وَعَلَى عِبَادِ اللهِ
الصَّالِحِينَ فَإِنَّكُمْ إِذَا قُلْتُمْ أَصَابَ كُلَّ عَبْدٍ فِي
السَّمَاءِ، أَوْ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَشْهَدُ أَنْ لاَ
إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

(बुखारी:835)

(अल्लाह पर बन्दों की तरफ़ से सलामती हो, जिब्रईल और मिकाईल पर सलामती हो, नबी ﷺ ने फ़रमाया: तुम अल्लाह पर सलामती न कहो क्योंकि अल्लाह ख़ुद सलामती वाला है, बल्कि इस की जगह पर यूँ कहो:

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ.....

"अत्ताहियात" के मानी हैं हर क़िस्म की ताज़ीम अल्लाह के लिए है, जिस का वह मालिक और मुसतहिक़ है, जैसे झुकना, रुकू करना, सजदा, दायमी बक़ा वग़ैरा, हर वह काम जो रब्बुलआलमीन की ताज़ीम के लिए किया जाए अल्लाह ही उसका मुस्तहिक़ है, जो शख़्स इन में से कुछ भी किसी दुसरे के लिए बजा लाए तो वह मुशरिक और काफ़िर समझा जायेगा, "सलवात" से मुराद सारी दुआएं हैं,

"अस्सलामुअलैकाअय्योहन्नबी व रहमतुल्लाहे व बरकातहू" यानी आदमी नबी ﷺ के लिए सलामती, रहमत और बरकत की दुआएं करे, जिस ज़ात के लिए अल्लाह से दुआ की जाती है उसे अल्लाह के साथ पुकारना गलत है, "अस्सलामुअलैना व अलाइबादिल्लाहिस्सालिहीन" कह कर आदमी अपने लिए और ज़मीन व आसमान में मौजूद हर नेक बन्दे के लिए सलामती की दुआ करे, सलाम करना दुआ है, नेक लोगों के लिए दुआ की जाती है न कि अल्लाह के साथ उन को पुकारा जाता है, "अशहदुअनलाइलाहाइल्लल्लाह" कह कर पुरे यक़ीन के साथ आदमी इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के इलावा ज़मीन व आसमान में किसी की इबादत सही नहीं है, "वअशहदुअन्नामुहमद्दररसूलुल्लाह" के ज़रिए मुहम्मद ﷺ के बन्दा होने की गवाही दी जाती है, कि वह अल्लाह के बन्दे हैं उन की इबादत दुरुस्त नहीं होगी, रसूल हैं उन को झुटलाया नहीं जायेगा, बल्कि उन की इताअत और इत्तेबाअ की जाएगी, अल्लाह ने उन्हें बन्दगी के ज़रिए शरफ बख़्शा, इस की दलील अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

تَبَارَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ
لِلْعَالَمِيْنَ نَذِيْرًا

(अल-फुर्क़ान:1)

बहुत बाबरकत है वह अल्लाह तआला की ज़ात जिस ने अपने बन्दे पर फुर्क़ान उतारा ताकि वह तमाम लोगों के लिए आगाह करने वाला बन जाए।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाह की तरफ़ से दरूद का मतलब मल-ए-आला में बन्दे की तारीफ़ है जैसा कि बुख़ारी में अबुल आलिया رضی اللہ عنہ से मर्वी है कि दरूद की निस्बत अगर अल्लाह की तरफ़ हो तो मल-ए-आला में अल्लाह की तरफ़ से बन्दे की तारीफ़ मुराद है, और अगर फरिश्तों की तरफ़ हो तो इस्तिग़फ़ार और इंसानों की तरफ़ हो तो दुआ मुराद है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ...

और इस के बाद के अक़वाल व अफ़आल सुन्नत हैं।

नमाज़ के वाजिबात आठ हैं:

(१) तकबीर-ए-तहरीमा के बाद वाली तमाम तकबीरात

(२) रुकू में "सुबहान रब्बियल अज़ीम" कहना

(३) इमाम और मुनफ़रिद का "समिअल्लाहूलिमनहमिदा" कहना

(४) सब का "रब्बनालकलहम्दो" कहना

(५) सजदों में "सुबहान रब्बियल आला" कहना

(६) दोनों सजदों के दरमियान "रब्बिग़्फ़िरली" कहना

(७) तशह्हुद-ए-अव्वल

(८) तशह्हुद-ए-अव्वल के लिए बैठना

रुक्न का मतलब यह है कि अगर ग़लती से या जान बूझ कर छोड़ दिया जाए तो नमाज़ बातिल हो जाएगी, और वाजिबात से मुराद यह है कि अगर अमदन छोड़ दें तो नमाज़ बातिल है, ग़लती से छूट जाएं तो सजदा-ए-सहु के ज़रिए इस की तलाफ़ी की जाएगी, वल्लाहु आलम।